

भारत-चीन राजनयिक संबंध

वर्ष 2020 में भारत और चीन 70 आयोजनों (सांस्कृतिक, धार्मिक और व्यापार संवर्द्धन संबंधी कार्यक्रम) के साथ अपने राजनयिक संबंधों की स्थापना की 70वीं वर्षगांठ मनाएंगे। 11-12 अक्टूबर, 2019 को मामल्लपुरम में आयोजित दूसरे भारत-चीन अनौपचारिक शिखर सम्मेलन के दौरान इन कार्यक्रमों को तय किया गया। वर्ष 1950 में समाजवादी देशों के समूह से बाहर भारत वह पहला देश था, जिसने चीन (People's Republic of China) के साथ राजनयिक संबंध स्थापित किये।

संसदीय कार्यक्रमों की मेज़बानी के अतिरिक्त दोनों देश अपनी सभ्यता में समानता का पता लगाने के लिये विभिन्न गतिविधियों का कार्यान्वयन करेंगे। इसके साथ ही व्यावसायिक एवं व्यापारिक संबंधों को बढ़ाने के लिये चीन, भारत-चीन व्यापार एवं निवेश सहयोग मंच (India-China Trade and Investment Cooperation Forum) और भारत में द्वितीय भारत-चीन औषधि विनियमन मंच (India-China Drug Regulation Forum) का आयोजन करेगा।

भारत-चीन औषधि विनियमन (India-China Drug Regulation)

- भारत-चीन औषधि विनियमन की प्रथम संगोष्ठी का आयोजन 21 जून, 2019 को शंघाई, चीन में किया गया था।
- यह संगोष्ठी चीन में भारतीय दवाओं के निर्यात पर ध्यान देने के साथ ही दवा क्षेत्र (Pharmaceuticals Sector) में दोनों देशों के बीच सहयोग बढ़ाने पर केंद्रित थी।
- चीन अपनी 'स्वस्थ चीन 2030' (Healthy China 2030) नीतिके तहत अपने नागरिकों को सस्ते मूल्य पर गुणवत्तापूर्ण दवाएँ उपलब्ध कराने के लिये प्रतिबद्ध है और भारत बेहद कम मूल्य पर उच्च गुणवत्तायुक्त जेनेरिक दवाएँ प्रदान करने वाले 'वैश्विक दवाखाने' (Pharmacy of the World) के रूप में उभरा है (2017-18 में लगभग 17.3 बिलियन डॉलर मूल्य की दवाओं का निर्यात)।

इस पृष्ठभूमि में चीन दवा क्षेत्र में भारत के साथ अपने संबंधों को मज़बूत करने की इच्छा रखता है।

वर्तमान चीन-भारत संबंध

- चीन एवं भारत सभ्यता के दो रूपों का प्रतिनिधित्व करने वाली दो उभरती हुई चरिस्थायी शक्तियाँ विश्व राजनीति में एक जटिल और गतिशील संबंध को प्रकट करती हैं।
- हाल के दिनों में भारत और चीन के संबंध और व्यापक हुए हैं एवं इसे दोनों देशों के लोगों के बीच सांस्कृतिक संबंधों की वृद्धि तथा बेहतर वाणिज्यिक व आर्थिक संबंधों में रूपांतरित किया जा सकता है।
- हाल ही में आधिकारिक स्तर पर दो अनौपचारिक शिखर सम्मेलन 'वुहान शिखर सम्मेलन' (Wuhan Summit 2018) एवं 'चेन्नई कनेक्ट' (Chennai Connect 2019) संपन्न हुए हैं। इसके अलावा दोनों देशों के बीच अब नियमित रूप से द्विपक्षीय/बहुपक्षीय मंचों पर उच्चस्तरीय वार्ताएँ होने लगी हैं।
- नरम कूटनीतिक अंतर्गत पर्यटन में वृद्धि (चीनी पर्यटकों को 5 वर्षों तक कई बार आने-जाने की अनुमतिके साथ वीजा प्रदान करना), सशस्त्र बलों के नियमित दौरे एवं नौसैनिक गतिविधियाँ, 10 सूत्रीय समझौता, 2018, दूसरे अनौपचारिक बैठक में 70 कार्यक्रमों के आयोजन का निर्णय, इत्यादि दोनों देशों के संबंधों में उत्तरोत्तर प्रगति को सूचित करता है।
- यह दोनों देशों के बीच बढ़ती हुई संलग्नता पर प्रकाश डालता है। यद्यपि कुछ प्रमुख मुद्दों पर विवाद अभी भी कायम है।

10-सूत्रीय समझौता (10 Pillars Agreement)

- दिसंबर 2018 में भारत और चीन के बीच लोगों में सांस्कृतिक संबंध एवं आपसी संपर्क को बढ़ाने हेतु दोनों देशों ने सहयोग के 10 स्तंभों को चिह्नित किया।
- ये 10 स्तंभ हैं - सांस्कृतिक आदान-प्रदान, फिलिमों और टेलीविज़न में सहयोग, संग्रहालय प्रबंधन, खेल, दोनों देशों में युवा-दल की यात्राएँ, पर्यटन, राज्य और शहर स्तरीय आदान-प्रदान, पारंपरिक चिकित्सा, योग एवं शिक्षा (जैसे-भारत में चीनी भाषा का शिक्षण)।

अंतर्राष्ट्रि मुद्दे

- कुछ बुनयिदी मुद्दों पर दोनों देशों के बीच एक बड़ी खई भी मौजूद है:
 - सीमा/क्षेत्रीय वविद (जैसे- पॉगंग त्सो झील का वविद 2019, डोकलाम गतरिध 2017, अरुणाचल प्रदेश में आसफला क्षेत्र पर वविद) ।
 - धारा 370 के कुछ प्रावधानों को नरिस्त करने को लेकर चीनी सक्रयिता व प्रतकिरयि ।
 - सीमा पार आतंकवाद ।
 - परमाणु आपूरतकिरत्ता समूह (Nuclear Suppliers Group- NSG) में भारत का प्रवेश, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) में भारत की स्थायी सदस्यता आदिपर चीन का प्रतकिल रुख ।
- भारत को लेकर आशंका: चीन स्वयं को वर्ष 2050 तक वशि्व की सर्वश्रेष्ठ शासकीय शक्तके रूप में प्रकट करना चाहता है और इसलये वह क्षेत्र (दक्षिण एशिया) में एक प्रतदिवंदी के रूप में भारत के बढ़ते प्रभुत्व को लेकर सहज नहीं है ।
 - चीन भारत से सर्वोत्तम सहयोग की आकांक्षा की नीतकी अपेक्षा रखता है और जसमें वह भारत से अधिक-से-अधिक सहयोग की उम्मीद करता है जैसा की 1950 के दशक के आसपास **हिदी-चीनी भाई-भाई** के दौर से लेकर स्थरि सीमा की मांग या चीनी **बेल्ट एंड रोड योजना (Belt and Road Initiative)** में शामिल होने की मांग आदि के रूप में देखा जा सकता है । जबकी चीन जवाब में भारत के प्रतऐसी ही प्रतबिदधता नहीं दरशाता है ।
- **पाकस्तान को लेकर चीन का रुख:** चीन ने भारत को दक्षिण एशिया क्षेत्र तक सीमति रखने और एक वैश्विक प्रतयिगी के रूप में उसके उदय को बाधति करने के लये दशकों से पाकस्तान के इस्तेमाल की रणनीत अपना रखी है । सीमा पार आतंकवाद के मुद्दे पर चीन द्वारा पाकस्तान का बचाव एवं समर्थन, पाकस्तान संरक्षति आतंकवादियों को वैश्विक स्तर नामति करने के वषिय पर चीन का बहाना तथा वरिध आदि उदाहरणों से इसकी पुष्ट की जा सकती है ।

वैश्विक मंचों पर चुनौतियों का सामना

वैश्विक परदृश्य में भारत और चीन वभिन्न वैश्विक मंचों पर सहयोगी के रूप में सक्रयि हैं एवं वभिन्न वैश्विक मुद्दों पर परस्पर सहमति या असहमति प्रदर्शति करते रहे हैं ।

सहमति के क्षेत्र

- **जलवायु परिवर्तन:** हाल ही में आयोजति **BASIC** (ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका, भारत और चीन) की मंत्रस्तिरीय बैठक में इन देशों के मंत्रयिों ने **समान लेकिन वभिदति उत्तरदायतिव** (Common But Differentiated Responsibilities) की अवधारणा का समर्थन कयि है, जो जलवायु परिवर्तन को संबोधति करने की प्रत्येक देश की भिन्न क्षमताओं और भिन्न उत्तरदायतिवों को चनिहति करती है ।
- **आर्थिक:** चीन और अमेरिका के बीच जारी व्यापार युद्ध तथा बढ़ते संरक्षणवाद की पृष्ठभूमि में हाल ही में संपन्न हुए **ब्रक्सि शखिर सम्मेलन** (ब्रासीलिया घोषणा पत्र) में **बहुपक्षवाद** (Multilateralism) का समर्थन करने और अंतर्राष्ट्रीय मामलों में संयुक्त राष्ट्र की केंद्रीय भूमिका की सराहना करने का आह्वान कयि गया ।
- **बहुपक्षीय मंच:** दोनों देश संयुक्त राष्ट्र के चार्टर और इसकी गैर-हस्तक्षेप की नीत में वशिवास करते हैं, **शंघाई सहयोग संगठन** (Shanghai Cooperation Organisation- SCO) और **पूर्वी एशियाई शखिर सम्मेलन** (East Asian Summit) में योगदान कर रहे हैं, साथ ही **वशि्व व्यापार संगठन** (WTO) में G-7 देशों के वदुद्ध संघर्षरत हैं ।

असहमति के क्षेत्र

- हाल में संपन्न हुए तीसरे **क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक साझेदारी** (Regional Comprehensive Economic Partnership- RCEP) सम्मेलन में चीन ने चालाकी से भारतीय बाजार में पहुँच बनाने का असफल प्रयत्न कयि ।
- चीन ने भारतीय महासागर में भारत (QUAD का सदस्य) की भूमिका पर भी असंतोष ज़ाहरि कयि है ।

अन्य घरेलू चुनौतियाँ

- वर्तमान अमेरिकी-चीनी व्यापार युद्ध से चीन की अर्थव्यवस्था नकारात्मक रूप से प्रभावति हुई है ।
- इसके साथ ही हॉन्गकॉन्ग में वरिध-प्रदर्शन और शनिजयिग प्रांत में उइगर मुसलमानों पर कार्रवाई जैसे घरेलू मुद्दे चीन को प्रभावति कर रहे हैं ।
- बलूचस्तान और खैबर-पख्तूनख्वा क्षेत्र में बढ़ते उग्रवाद के कारण चीन-पाकस्तान आर्थिक गलियारे (China Pakistan Economic Corridor- CPEC) को खतरे की आशंका के चलते भी चीन चतिति है ।

आगे की राह

- **सामरकि:** सीमाओं को परभाषति करने के साथ ही उनके सीमांकन और परसीमन कयि जाने की आवश्यकता है ताकि आसपास के क्षेत्र में रहने वाले लोगों के भय को दूर कयि जा सके और संबंधों को मज़बूत कयि जा सके ।
- **आर्थिक मोर्चे पर:** पछिले दस वर्षों के द्विपक्षीय व्यापार में चीन ने भारत के मुकाबले \$750 बलियिन की बढ़त बना ली है, जसै कम करना बहुत

आवश्यक है। व्यापार घाटे को कम करने में सेवा क्षेत्र एक प्रमुख भूमिका निभा सकता है।

- चीन को अपने बाज़ार में फार्मास्यूटिकल्स और सॉफ्टवेयर पैकेज़ जैसी भारतीय सेवाओं की अनुमति देकर एक न्यायपूर्ण अवसर का निर्माण करना होगा। इसके अतिरिक्त, RCEP में दोनों देशों के बीच समान वतिरण और आपसी मतभेदों को दूर करने की आवश्यकता है।
- दोनों देश अपनी अर्थव्यवस्थाओं को एकीकृत करने एवं आपसी संबंध को आगे बढ़ाने के लिये अपनी सॉफ्ट पावर (Soft Power) का प्रभावी ढंग से उपयोग कर सकते हैं।
 - **पर्यटन:** भारत आने वाले चीनी पर्यटकों की तुलना में चीन जाने वाले भारतीय नागरिकों की संख्या अधिक है। अतः सांस्कृतिक संपर्क को बढ़ाया जाना चाहिये ताकि सहयोग के क्षेत्रों का निर्माण किया जा सके और उन व्यवसायों को बढ़ाया जा सके जिनके परिणामस्वरूप राष्ट्रीय स्तर पर विवादों का समाधान हो सकता है।
 - शिक्षा के माध्यम से पर्यटन को बढ़ावा देना चाहिये और विशेष रूप से बौद्ध तीर्थ स्थलों (Buddhist Circuit) एवं आध्यात्म से जुड़ी यात्राओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिये।

भारत और चीन के बीच की समस्याओं को अल्पावधि में हल किया जाना कठिन है, लेकिन मौजूदा रणनीतिक अंतर को न्यूनतम करने, मतभेदों को कम करने और यथास्थिति बनाए रखने जैसे उपायों से समय के साथ आपसी संबंधों को और बेहतर बनाया जा सकता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये सरकार से लेकर आम लोगों तक और शिक्षा संस्थानों से लेकर व्यवसाय तक प्रत्येक स्तर पर चीन के साथ संलग्नता में वृद्धि हेतु लक्ष्य तय करना होगा।

अभ्यास प्रश्न: भारत और चीन के मध्य संबंधों में प्रगति तो आ रही है कति अब भी दोनों देशों में अच्छी मतिरता नहीं है। कथन की समीक्षा कीजिये।

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/india-china-relationship>

